हर सुबह ये पांच बातें खुद से बोल

1.] मैं सबसे अच्छा हूं

2.] मैं यह काम कर सकता हूं

3.] भगवान हमेशा मेरे साथ है

4.] मैं एक विजेता हूं

5.] आज का दिन मेरा है

"सच्ची खोज अच्छी खबर"

ज्ञान सरोवर

R.N.I.Reg.No.MAHHIN/2009/27377 (हिन्दी साप्ताहिक) डाक पंजीकरण संख्या- MH/MR/North East/237/2012-14

वर्ा : 16 अंक : 45 (प्रत्येक गुरूवार) मुम्बई, 21 नवम्बर से 27 नवम्बर, 2024 पृठ : 8 मूल्य : 2.00 रूपये

पीएम मोदी 56 साल में गुयाना की यात्रा करने वाले पहले भारतीय पीएम बने, देश के राष्ट्रपति ने किया भव्य स्वागत

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बुधवार को गुयाना पहुंचे, जो 56 वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की दक्षिण अमेरिकी देश की पहली यात्रा है। जॉर्जटाउन हवाई अड्डे पर गुयाना के राष्ट्रपति मोहम्मद इरफ़ान अली और एक दर्जन से अधिक कैबिनेट मंत्रियों ने अभूतपूर्व गर्मजोशी के साथ उनका स्वागत किया। उनके आगमन पर दोनों नेताओं ने गले मिलकर एक–दूसरे का अभिवादन किया। जॉर्जटाउन में पीएम मोदी का औपचारिक स्वागत किया गया और उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। इसके बाद वे गुयाना की संसद की विशेष बैठक को संबोधित करेंगे। वे कैरेबियाई साझेदार देशों के नेताओं के साथ दूसरे भारत–कैरिकॉम शिखर सम्मेलन में भी भाग लेंगे। गुयाना के राष्ट्रपति इरफ़ान अली के निमंत्रण पर की गई यह यात्रा भारत और गुयाना के बीच मजबूत होते संबंधों को दर्शाती है। विदेश मंत्रालय ने जनवरी 2023 में प्रवासी भारतीय दिवस में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रपति अली की भूमिका का हवाला देते हुए बढ़ते जुड़ाव का उल्लेख किया। अपने आगमन के बाद, पीएम मोदी को राजधानी शहर जॉर्जटाउन में औपचारिक स्वागत और गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। अपनी यात्रा के दौरान, वह गुयाना की संसद की विशेष बैठक को संबोधित करेंगे और दूसरे भारत–कैरिकॉम शिखर सम्मेलन में भी भाग लेंगे, जहाँ वह अन्य कैरेबियाई देशों के नेताओं के साथ शामिल होंगे। विदेश मंत्रालय ने कहा कि यह यात्रा पिछले कार्यक्रमों पर आधारित है, जिसमें जनवरी 2023 में प्रवासी भारतीय दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रपति अली की भूमिका शामिल है। भारत और गुयाना ने स्वास्थ्य, कनेक्टिविटी, नवीकरणीय ऊर्जा और रक्षा सहित कई प्रमुख क्षेत्रों में दीर्घकालिक विकास साझेदारी बनाए रखी है। दोनों देशों के बीच हाल की पहलों में गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स द्वारा निर्मित एक समुद्री नौका की डिलीवरी, ऋण की एक लाइन के तहत दो HAL 228 विमानों का प्रावधान, 30,000 स्वदेशी परिवारों के लिए सौर प्रकाश व्यवस्था और प्ज्म् कार्यक्रम के माध्यम से भारत में 800 गुयाना के पेशेवरों का प्रशिक्षण शामिल है। गुयाना, जो दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में उभरा है, हाइड्रोकार्बन, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और रक्षा जैसे क्षेत्रों में आगे के सहयोग के लिए कई अवसर प्रस्तुत करता है। अपनी यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी इन अवसरों का पता लगाने तथा दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय सहयोग को और मजबूत करने के लिए राष्ट्रपति अली के साथ उच्च स्तरीय वार्ता करेंगे।

संकट का कारण मुख्यमंत्री हैं... मणिपुर को लेकर भाजपा पर बरसे पी चिदंबरम, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से की ये मांग

नई दिल्ली(संवाद सूत्र)। राज्यसभा सांसद और कांग्रेस नेता पी चिदंबरम ने कहा कि 5,000 जवानों को मणिपुर ले जाना राज्य में संकट का समाधान नहीं है। उन्होंने पूर्वोत्तर राज्य में अस्थिर स्थिति के लिए मणिपुर के मुख्यमंत्री बीरेन सिंह को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने कांग्रेस के रुख को भी दोहराया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को स्थिति को संभालने के लिए खुद राज्य का दौरा करना चाहिए। चिदम्बरम की यह टिप्पणी जिरीबाम में हाल ही में हुई हत्याओं के विरोध में मैतेई समूह के सोमवार को सड़कों पर उतरने और कई सरकारी कार्यालयों पर ताला लगाने के बाद आई है। चिदंबरम ने कहा कि 5000 से अधिक केंद्रीय सशस्त्र पुलिस जवानों को भेजना मणिपुर संकट का समाधान नहीं है। यह अधिक बुद्धिमानी है। यह स्वीकार करना कि मुख्यमंत्री बीरेन सिंह संकट का कारण हैं और उन्हें तुरंत हटाना है। केंद्र ने स्थिति से निपटने के लिए राज्य में लगभग 5,000 अर्धसैनिक बल भेजने का फैसला किया है। उन्होंने कहा कि यह अधिक समझ में आता है। मैतेई, कुकी–ज़ो और नागा एक राज्य में तभी एक साथ रह सकते हैं जब उनके पास वास्तविक क्षेत्रीय स्वायत्तता हो। यह अधिक राजनेता कौशल हैरू माननीय प्रधान मंत्री के लिए अपनी जिद छोड़कर, मणिपुर का दौरा करना, और मणिपुर के लोगों से विनम्रता के साथ बात करना और उनकी शिकायतों और आकांक्षाओं को प्रत्यक्ष रूप से जानना। कांग्रेस प्रधानमंत्री से मणिपुर राज्य के दौरे की मांग कर रही है। पार्टी ने गृह मंत्री अमित शाह के इस्तीफे की भी मांग की है। पहाड़ी जिले जिरीबाम में कांग्रेस और भाजपा के कार्यालयों में तोड़फोड़ की गई है, जहां पहले एक अज्ञात शव मिला था, जिससे हिंसा भड़क गई थी। यह अशांति उन घटनाओं के बाद है जहां गुस्साई भीड़ ने इंफाल घाटी के विभिन्न जिलों में एक वरिष्ठ मंत्री और एक कांग्रेस विधायक सहित तीन भाजपा विधायकों के घरों में आग लगा दी, जहां अनिश्चितकालीन कर्फ्यू लगाया गया है। सुरक्षा बलों ने शनिवार शाम आंदोलनकारियों को मणिपुर के मुख्यमंत्री के पैतृक घर पर हमला करने से रोक दिया. पिछले साल मई से अब तक इम्फाल घाटी के मेइतेई और आसपास की पहाड़ियों से कुकी–ज़ो समूहों के बीच जातीय हिंसा के कारण 220 से अधिक लोगों की जान चली गई है और हजारों लोग विस्थापित हुए हैं।

बदलापुर रेप आरोपी की मां पहुंची हाई कोर्ट, एकनाथ शिंदे के खिलाफ मानहानि का मुकदमा

ठाणे। महाराष्ट्र में ठाणे जिले के बदलापुर में नाबालिगों के रेप और हत्या के मामले में गिरफ्तारी के बाद मुठभेड़ में मारे गए आरोपी अक्षय शिंदे की मां बॉम्बे हाई कोर्ट पहुंची हैं।अलका अन्ना शिंदे ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के अलावा कई अन्य राजनेता और मीडिया हाउस के खिलाफ मानहानि की शिकायत दर्ज कराई है।आरोपी की मां ने कोर्ट में याचिका दायर कर बिना शर्त माफी और करोड़ों रुपये हर्जाना मांगा है। उन्होंने अपनी याचिका में बताया कि उनके बेटे का एनकाउंटर विधानसभा चुनाव में राजनीतिक लाभ पाने के लिए किया गया था, जिसका राजनेताओं ने समर्थन किया।याचिका में आरोपी की मां ने कहा कि अक्षय शिंदे एक राजनीतिक पीड़ित थे और इसकी वजह से उनके पूरे परिवार को समाज का विरोध झेलना पड़ा।उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ राजनेताओं ने उनके बेटे को राक्षस करार दिया, जिसकी वजह से उसके अंतिम संस्कार में भी समस्या पैदा हुई। अलका ने याचिका में कहा कि उनके बेटे की गिरफ्तारी के बाद जब उसकी तस्वीर मीडिया में दिखाई गई तो समाज में उनका बहिष्कार शुरू हो गया।उनको घर से निकाल दिया गया और उनकी आजीविका के साधन चले गए। उनको बदनामी की वजह से काम नहीं मिल रहा और वे भीख मांगने पर मजबूर हैं।याचिकाकर्ता ने बताया कि उनके पति रेलवे और बस स्टेशन पर रहे रहे हैं, जबकि याचिकाकर्ता सफाई का काम कर रही हैं।

द्रोणाचार्य पर परिसंवाद संपन्न

श्री नरसिंह के. दुबे चॅरिटेबल ट्रस्ट एवं अखिल ब्रह्मविज्ञान संस्थान, मुंबई के संयुक्त तत्त्वावधान में नालासोपारा में डॉ.श्रीभगवान तिवारी के उपन्यास द्रोणाचार्य पर परिसंवाद संपन्न हुआ। श्री गणेश,सरस्वती एवं भगवान परशुराम की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण, दीप प्रज्वलन, वेदमंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। समारोह की अध्यक्षता नालासोपारा आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज एवं रुग्णालय के डायरेक्टर डॉ. ओमप्रकाश दुबे ने की तथा अपने उद्‌बोधन में परिचर्चा को रोचक बनाने के लिए वक्ताओं को लिखित अभिपत्र न पढ़कर स्वतः की अभिव्यक्ति प्रस्तुत करने का सुझाव दिया एवं भगवान परशुराम के मंदिर के निर्माणार्थ अपना संकल्प दुहराया।मुख्य अतिथि राजपुताना परिवार के संस्थापक ददन सिंह ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में द्रोणाचार्य की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। विशेष अतिथि भवन निर्माता आशीष मिश्र ने आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद दिया। विशिष्ट अतिथि उत्तर भारतीय संघ मुंबई के महामंत्री देवेंद्र तिवारी ने विद्वानों के वक्तव्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि मंच पर विराजमान अतिथिगण चाहें तो अकेले मंदिर बनवा सकते हैं किंतु जन भागीदारी से निर्मित भगवान परशुराम का मंदिर ऐतिहासिक होगा। ऐतिहासिक राममंदिर निर्माण के साक्षी, सिद्धमठ के संस्थापक वेदमूर्ति गोरक्षनाथ पैठणकर ने द्रोणाचार्य को भगवान परशुराम का अनन्य शिष्य बताते हुए द्रोणाचार्य की परवशता का उल्लेख करते हुए डॉ.श्रीभगवान तिवारी को शतायु होने का आशीर्वाद देते हुए उनकी आँखों के सामने ही मंदिर बनेगा ऐसा पुनः संकल्प किया। सम्मानमूर्ति श्रेया लाइफ साइंसेज के एडमिनिस्ट्रेटर अनिल कुमार मिश्र ने मंदिर निर्माणार्थ भरपूर सहयोग का वचन दिया।डॉ. श्रीभगवान तिवारी ने अपने उद्‌घाटन भाषण में सनातन धर्म की रक्षा के लिए संगठित होने पर बल दिया तथा धर्म की वास्तविक परिभाषा बताई।

अखिल ब्रह्म विज्ञान संस्थान, मुंबई के अध्यक्ष आचार्य रामव्यास उपाध्याय ने समारोह अध्यक्ष डॉ. ओमप्रकाश दुबे का शाल, पुष्पगुच्छ तथा श्रीफल प्रदानकर सम्मान किया। डॉ.ओमप्रकाश दुबे जी ने शाल, श्रीफल, पुष्पगुच्छ से अतिथियों का स्वागत किया।

डॉ. रोशनी किरण ने सरस्वती वंदना एवं परशुराम वंदना प्रस्तुत की। अर्चना उपाध्याय ने स्वागत गीत एवं भूमिका प्रस्तुत की। वक्ताओं में डॉ.अमरबहादुर पटेल, प्रो.शशिकला पटेल, डॉ.अवनीश सिंह, डॉ. चन्द्रभूषण शुक्ल,कविवर रासविहारी पाण्डेय, आचार्य वीरेंद्र त्रिपाठी, आचार्य त्रिलोकीनाथ मिश्र, रीना राय ने विद्वत्तापूर्ण वक्तव्य दिया। डॉ.शिवनारायण दुबे, अनीता दुबे, प्रतिभा दुबे, अरुण दुबे, मंगलदेव तिवारी, दिनेश त्रिपाठी, दिनेश चतुर्वेदी,डॉ. धीरज सिंह ने वक्ताओं का सम्मान किया। आचार्य रामव्यास उपाध्याय ने अतिथियों का परिचय दिया, डॉ. चन्द्रभूषण शुक्ल ने संचालन तथा जनार्दन मिश्र ने आभार प्रकट किया। राष्ट्रगान एवं जलपान के साथ समारोह संपन्न हुआ।

खेलों का क्रिकेटीकरण न करें...

*देशभक्ति के लिए क्रिकेट देखें मगर अन्य खेल स्पर्धाओं (हॉकी, बैडमिंटन, कुश्ती, एथलेटिक्स, बॉक्सिंग, निशानेबाजी, शतरंज, फुटबॉल, तैराकी, जिमनास्टिक, टेनिस एवं अन्य सभी इवेंट) का क्रिकेटीकरण (**Cricketization**) न करें... सभी खेल स्पर्धा और भारतीय खिलाड़ी बराबर है...भारत, एशियन हॉकी महिला में तीसरी बार विश्व स्तरीय ताकतवर एवं ओलंपिक मेडलिस्ट मजबूत चीन को 1–0 से हराकर एशियाई चौंपियन बना. .. भारतीय हॉकी टीम एवं बेटियों को समस्त भारतवासियों की तरफ से सैल्यूट....*

-संजय वर्मा, पत्रकार (खेल एवं विज्ञान) (गोरखपुर)...

उत्तर भारतीय दीपावली स्नेह मिलन समारोह मुलुंड में संपन्न

मुंबई। उत्तर भारतीय दीपावली स्नेह मिलन समारोह का आयोजन मुलुंड हाई स्कूल, चंदन बाग़ रोड, मुलुंड पर उत्तर भारतीय संगम द्वारा किया गया। इस अवसर पर गीत संगीत का कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध लोकगीत गायक रॉबीन यादव सभी का मनोरंजन किया। समारोह की अध्यक्षता रमाशंकर तिवारी एवं संचालन डॉ बाबूलाल सिंह ने किया। इस अवसर पर प्रमुख अतिथि के रुप में राकेश शेट्टी (म वि आ – कांग्रेस उम्मीद वार), मुंबई कांग्रेस के उपाध्यक्ष गोविन्द सिंह, सचिव किशोर मुंडेकल, उत्तम गीते (जिला कार्याध्यक्ष), डॉ आर आर सिंह (वरिष्ठ कांग्रेस नेता), समाजसेवी के. एन सिंह, बीरेंद्र पाठक, राजेंद्र श्रीवास्तव, सुक्खु गुप्ता,मंगला शुक्ला,मदनलाल मौर्य,रमेश यादव,अब्दुल जे खान,सफतुल्ला चौधरी उपस्थित रहे। आयोजक डॉ. सचिन सिंह,डॉ. आर. एम. पाल,अमित जायसवाल, शिवनारायण जायसवाल, ओमप्रकाश जैसवार, मोहित सिंह, बबिता गुप्ता, शरीफ खान, अनिरुद्ध दुबे ने गमछा एवं पुष्प गुच्छ देकर किया। समारोह में महिला नेता नीता जोशी, अश्विनी पोछे, अलका सावला, कालिंदा शिंगाड़े, भारती बागवे, पुष्पा साकरी , मीना सोलिया, सौ. भागवत, आस्था गुप्ता, गायत्री पाल, का सम्मान किया गया। इस अवसर पर सम्मानित अतिथि के रुप में बाबूराम चौधरी, रविन्द्र अग्रवाल शशिकांत यादव, हरीश गुप्ता, अरविंद यादव, राजेंद्रउटवाल, प्रकाश जैसवाल, रईस खान, संतोषसिंह, भरत चौबे, अनिल यादव, सानू शेख,सोनू सिंह , अभयराज यादव,सुभाष पांडे, जयभारत सिंह, दयाशंकर पाल,गया प्रसाद गुप्ता, दीनानाथ यादव, प्रकाश मौर्य,अनिल (छोटू)यादव, अरुण यादव,अमित यादव, सुरेंद्र मिश्रा, जगदीश शर्मा, बॉबी शर्मा, आकाश पांडे, नितेश सिंह, सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

सिख धर्म एक जिंदा और बहादुर धर्म....

सिख धर्म – 5वीं सदी में जिसकी शुरुआत गुरु नानक देव ने की थी। सिखों के धार्मिक ग्रन्थ श्री आदि ग्रंथ या गुरु ग्रंथ साहिब तथा दसम ग्रन्थ हैं। सिख धर्म में इनके धार्मिक स्थल को गुरुद्वारा कहते हैं। आमतौर पर सिखों के दस सतगुर माने जाते हैं, लेकिन सिखों के धार्मिक ग्रंथ में छः गुरुओं सहित तीस भगतों की बानी है, जिन की सामान सिख्याओं को सिख मार्ग पर चलने के लिए महत्त्वपूर्ण माना जाता है। 1469 ईस्वी में पंजाब में जन्मे नानक देव ने गुरमत को खोजा और गुरमत की सिख्याओं को देश देशांतर में खुद जा कर फैलाया था। सिख उन्हें अपना पहला गुरु मानते हैं। गुरमत का परचार बाकि 9 गुरुओं ने किया। 10वे गुरु गोबिन्द सिंह जी ने ये परचार खालसा को सोंपा और ज्ञान गुरु ग्रंथ साहिब की सिख्याओं पर अम्ल करने का उपदेश दिया। इसकी धार्मिक परम्पराओं को गुरु गोबिन्द सिंह ने 30 मार्च 1699 के दिन अंतिम रूप दिया। विभिन्न जातियों के लोग ने सिख गुरुओं से दीक्षा ग्रहणकर ख़ालसा पन्थ को सजाया। पाँच प्यारों ने फिर गुरु गोबिन्द सिंह को अमृत देकर ख़ालसे में शामिल कर लिया। इस ऐतिहासिक घटना ने सिख पंथ के तक़रीबन 300 साल इतिहास को तरतीब किया। संत कबीर, धना, साधना, रामानंद, परमानंद, नामदेव इतियादी, जिन की बानी आदि ग्रंथ में दर्ज है, उन भगतों को भी सिख सत्गुरुओं के सामान मानते हैं और उन कि सिख्याओं पर अमल करने कि कोशिश करते हैं। सिख एक ही ईश्वर को मानते हैं, जिसे वे एक–ओंकार कहते हैं। उनका मानना है कि ईश्वर अकाल और निरंकार है।

आज भारत में सामाजिक स्वरुप से लगाए देश के सैन्य/युद्ध के कारको में सिखों (वीर योद्धा) का अमूल्य योगदान है। भारतीय सेना में तो सिखों को बहुत अमूल्य एवं प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है। व्यवसाय में तो देश ही नहीं बल्कि कई देशो के उधोग–धंधे एवं छोटे–बड़े आर्थिक पहलुओं पर उनकी अच्छी मात्रा में पकड़ है। निश्चित रूप से यह धर्म सभी पहलुओं पर खरा उतरता है। ससम्मान।

–संजय वर्मा, स्वतंत्र पत्रकार –सामाजिक विज्ञान, विज्ञान एवं खेलकूद (गोरखपुर)

सम्पादकीय...

सेहत से खिलवाड़, वायु प्रदूषण से निपटने में नाकाम सरकारी तंत्र

यह देखना दयनीय और चिंताजनक है कि समस्त सरकारी तंत्र दिल्ली और देश के एक बड़े हिस्से को अपनी चपेट में लेने वाले वायु प्रदूषण से निपटने में बुरी तरह नाकाम है। इससे भी अधिक चिंताजनक यह है कि इस नाकामी को छिपाने की कोशिश होती दिख रही है। इसके तहत वायु गुणवत्ता सूचकांक यानी एक्यूआइ के सही आंकड़े को सार्वजनिक करने से बचा जा रहा है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड यानी सीपीसीबी यह दलील दे रहा है कि 500 से अधिक एक्यूआइ के आंकड़े को इसलिए प्रकट नहीं किया जाता, क्योंकि यह स्पष्ट ही होता है कि वायु की गुणवत्ता में इससे अधिक कमी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है और यह आंकड़ा छूते ही उससे निपटने के कदम उठाए जाने लगते हैं। क्या सीपीसीबी यह कहना चाहता है कि एक्यूआइ चाहे 500 हो या 800 या फिर 1200 तो यह एक ही बात है? आखिर ऐसे कैसे हो सकता है? यदि कहीं एक्यूआइ 900 होगा तो वह उस इलाके से दोगुना हानिकारक होगा, जहां वह 450 होगा। यदि सीपीसीबी यह कहना चाहता है कि इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि एक्यूआइ 450 हो या 900 तो इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। यह भी स्वाभाविक है कि यदि कहीं एक्यूआइ 450–500 हैं और कहीं 900–1000 तो जहां ज्यादा है, वहां वायु प्रदूषण की रोकथाम के कहीं अधिक कठोर उपाय करने होंगे। सीपीसीबी की मानें तो जो अन्य एजेंसियां दिल्ली या फिर दूसरे शहरों का एक्यूआइ आंकड़ा दे रही हैं, वह भिन्न मानकों पर है। यह सही हो सकता है, लेकिन क्या इसके आधार पर यह मान लिया जाए कि दिल्ली में एक्यूआइ 450–500 से ऊपर जा ही नहीं रहा है? सीपीसीबी यह तो कह रहा है कि वायु गुणवत्ता संबंधी उसके आंकड़े प्रमाणिक और विश्वसनीय हैं, लेकिन वह यह नहीं कह पा रहा है कि अन्य एजेंसियों के आंकड़े भरोसे लायक नहीं। आखिर क्यों? कम से कम सीपीसीबी को सही आंकड़े तो देने ही चाहिए, क्योंकि यह कोई नियम नहीं हो सकता कि यदि कहीं एक्यूआइ आंकड़ा 500 से ऊपर हो जाए तो उसे सार्वजनिक करने की जरूरत नहीं रह जाती। वायु की गुणवत्ता का सही आंकड़ा न देना लोगों को अंधेरे में रखना और साथ ही उनकी सेहत से जानबूझकर खिलवाड़ करना है। यदि सीपीसीबी के वायु की गुणवत्ता मापने के मानक भिन्न हैं तो भी उसे ऐसा तंत्र तो बनाना ही होगा, जिससे अधिकतम एक्यूआइ की सटीक गणना की जा सके, ताकि किसी तरह का संशय न रहे। इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि उन कारणों का पता लगाया जाए, जिनके चलते तमाम उपायों के बाद भी वायु प्रदूषण पर लगाम नहीं लग रही है। अच्छा हो कि इस नतीजे पर पहुंचने में और देर न की जाए कि वायु प्रदूषण से निपटने के लिए जो कदम उठाए जा रहे हैं, वे निष्प्रभावी हैं और उनसे बात बनने वाली नहीं है।

रचनात्मक अर्थव्यवस्था का नेतृत्व करता भारत, नवरचना को बढ़ावा देने के लिए सरकार प्रतिबद्ध

आप पूरी दुनिया में भारत के डिजिटल प्रतिनिधि हैं। आप वोकल फार लोकल के ब्रांड एंबेसडर हैं।" इस साल के शुरू में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रथम नेशनल क्रिएटर अवार्ड प्रदान करते समय कहे गए ये प्रेरक शब्द भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था की परिवर्तनकारी भूमिका को उजागर करते हैं। आज हमारे रचनाकार केवल कहानीकार नहीं हैं, वे राष्ट्र का निर्माण कर भारत की पहचान को आकार दे रहे हैं और वैश्विक स्तर पर इस क्षेत्र की गतिशीलता का प्रदर्शन कर रहे हैं। आज से गोवा में 55वां भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (आइएफएफआइ) का आरंभ हो रहा है, जिसकी थीम 'युवा फिल्म निर्माता– भविष्य अब है।' अगले आठ दिनों में आइएफएफआईसैकड़ों फिल्मों के प्रदर्शन के साथ फिल्म क्षेत्र के दिग्गजों के साथ संवाद करेगा। इसमें वैश्विक सिनेमा की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। वैश्विक और भारतीय सिनेमाई उत्कृष्टता का यह संगम भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था को नवाचार, रोजगार और सांस्कृतिक कूटनीति के एक केंद्र के रूप में व्यक्त करता है। भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था 30 बिलियन डालर के उद्योग के रूप में सामने आई है, जो सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 2.5 प्रतिशत का योगदान देती है और 8 प्रतिशत कार्यबल को रोजगार प्रदान करती है। सिनेमा, गेमिंग, एनीमेशन, संगीत, प्रभावशाली मार्केटिंग और अन्य गतिविधियों को समाहित करने वाला यह क्षेत्र भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य की जीवंतता को दर्शाता है। 3,375 करोड़ रुपये मूल्य वाले एक प्रभावशाली मार्केटिंग क्षेत्र और 2,00,000 से अधिक पूर्णकालिक सामग्री निर्माताओं के साथ यह उद्योग भारत की वैश्विक आकांक्षाओं को आगे बढ़ाने वाली एक गतिशील शक्ति है। गुवाहाटी, कोच्चि और इंदौर आदि शहर रचनात्मक केंद्र बन रहे हैं, जो विकेंद्रीकृत रचनात्मक क्रांति को बढ़ावा दे रहे हैं। भारत के 110 करोड़ इंटरनेट उपयोगकर्ता और 70 करोड़ सोशल मीडिया उपयोगकर्ता रचनात्मकता के इस लोकतंत्रीकरण को आगे बढ़ा रहे हैं। सोशल मीडिया प्लेटफार्म और ओटीटी सेवाएं रचनाकारों को विश्व स्तर पर दर्शकों से सीधे जुड़ने में सक्षम बनाती हैं। क्षेत्रीय सामग्री और स्थानीय स्तर की कहानी कहने की प्रतिभा ने कथा को और विविधता प्रदान की है, जिससे भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था वास्तव में समावेशी बन गई है। ये सभी कंटेंट क्रिएटर आर्थिक स्तर पर अभूतपूर्व सफलता प्राप्त कर रहे हैं। इनके दस लाख से ज़्यादा फालोअर्स हैं और ये प्रति माह 20,000 से 2.5 लाख रुपये तक कमा रहे हैं। यह व्यवस्था आर्थिक रूप से लाभकारी है और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और

सामाजिक प्रभाव के लिए एक मंच भी। रचनात्मक अर्थव्यवस्था का गहरा प्रभाव है, जो सकल घरेलू उत्पाद के विकास से कहीं आगे तक विस्तारित है। यह पर्यटन, आतिथ्य और प्रौद्योगिकी सहित विभिन्न क्षेत्रों के सहायक उद्योगों को काफी प्रभावित करता है। इसके अलावा डिजिटल प्लेटफार्म उपेक्षित लोगों की आवाज भी मजबूती से उठाता है। यह सामाजिक समावेशन, विविधता और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण को भी समृद्ध करता है। कथ्य प्रस्तुत करने की अपनी कला द्वारा भारत ने बालीवुड से लेकर क्षेत्रीय सिनेमा तक अपनी वैश्विक साफ्ट पावर को मजबूती दी है, जो विश्व मंच पर प्रचुर सांस्कृतिक भाव प्रदर्शित करता है। यह क्षेत्र वैश्विक स्थिरता के लक्ष्यों के साथ भी जुड़ा है, जिसमें पर्यावरण अनुकूल उत्पादन पद्धतियां और फैशन के क्षेत्र में टिकाऊ प्रक्रियाएं शामिल हैं, जो पर्यावरण के प्रति जागरूकता की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था को वैश्विक मंच पर उच्च्च स्थान पर पहुंचाने के लिए सरकार तीन प्रमुख स्तंभों पर प्राथमिकता से ध्यान दे रही हैरू प्रतिभा संकलन और उनकी क्षमता बढ़ाना, सृजनकारों के लिए बुनियादी ढांचा सुदृढ़ करना और फिल्म्म कथ्य शिल्प्प को सशक्त बनाने की प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना। यह दृष्टिकोण भारतीय रचनात्मक प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइसीटी) की स्थापना नवरचना और रचनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता दर्शाता है। आइआइसीटी का उद्देश्य भारतीय सृजनकारों, चाहे वे सिनेमा, एनीमेशन, गेमिंग या डिजिटल कला क्षेत्र के हों, को घरेलू स्तर पर और एक एकीकृत सांस्कृतिक शक्ति के रूप में तथा वैश्विक मनोरंजन के क्षेत्र में अग्रणी बनाना सुनिश्चित करना है। फिल्म निर्माण में नवीनतम तकनीक अपनाकर संवाददात्म्क मनोरंजन और अपने सम्म्मोहन के साथ भारत मनोरंजन सामग्री निर्माण का भविष्य फिर से परिभाषित कर रहा है। विश्व आडियो विजुअल और मनोरंजन शिखर सम्मेलन (वेव्स) देश को कंटेंट निर्माण और अनूठे विचार के साथ वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करने की ऐतिहासिक पहल है। डब्ल्य्यूएवीईएस एक गतिशील मंच है, जहां सृजनकार इस उद्योग के अग्रणी और नीति निर्माता आडियो विजुअल और मनोरंजन क्षेत्रों के भविष्य को आकार देने के लिए साथ मिले हैं। प्रधानमंत्री की क्रिएट इन इंडिया दृष्टि के अनुरूप यह सम्मेलन इस क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देता है, साथ ही भारत की रचनात्मक क्षमता का प्रदर्शन कर वैश्विक भागीदारों को अपने से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। क्रिएट इन इंडिया चौलेंज भारत की सृजनात्मक अर्थव्यवस्था (क्रिएटर इकोनामी) की अपार संभावनाओं को उजागर करने के लिए डिजाइन की गई एक अग्रणी पहल है। वेव्स की तैयारी के हिस्से के रूप में शुरू की गई इन चुनौतियों का उद्देश्य एनिमेशन, गेमिंग, संगीत, ओटीटी कंटेंट और इमर्सिव स्टोरीटेलिंग जैसे प्रमुख क्षेत्रों में प्रतिभाओं को प्रेरित और सशक्त बनाना है। 14,000 से अधिक पंजीकरणों और स्टार्टअप्स, स्वतंत्र रचनाकारों और उद्योग के पेशेवरों की सक्रिय भागीदारी के साथ यह पहल भारत की अभिनव भावना को प्रदर्शित करती है। जब हम आइएफएफआईमें सिनेमाई प्रतिभा के इस आठ दिवसीय उत्सव की शुरुआत कर रहे हैं, तो संदेश स्पष्ट हैरू भारत के रचनाकार वैश्विक रचनात्मक अर्थव्यवस्था का नेतृत्व करने के लिए तैयार हैं। भारत सरकार नीतिगत सुधारों, बुनियादी ढांचे के विकास और नवाचार के लिए प्रोत्साहन के माध्यम से इस क्षेत्र का समर्थन करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। हमारे रचनाकारों के लिए कार्रवाई का आह्वान सरल, लेकिन गहरा है। वे 5ळ, वर्चुअल प्रोडक्शन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी अत्याधुनिक तकनीक अपनाएं तथा ऐसे प्लेटफार्म का लाभ उठाएं, जो भौगोलिक बाधाओं को पार करते हैं और ऐसी कहानियां बताते हैं, जो भारत की अनूठी पहचान दर्शाते हुए वैश्विक स्तर पर गूंजती हैं। भविष्य उन लोगों का है जो नवाचार करते हैं, सहयोग करते हैं और सहजता से सृजन करते हैं। आइए हम साथ मिलकर यह सुनिश्चित करें कि हर भारतीय रचनाकार एक वैश्विक कहानीकार बने, ताकि भविष्य को आकार देने वाली कहानियों के लिए पूरा विश्व भारत की ओर देखे।

जाने-माने पत्रकार श्री दीपक चौरसिया की कलम से....

मैं अंध मोदी प्रेमी नही हूं।
लेकिन पिछले 3 सालों में
"AIIMS में
231 अंग दान करने वालों में ऐक भी व्यक्ति मुस्लिम नहीं
जबकि
अंग प्राप्त करने वालों में 39 ष्मुस्लिम हैं ।।
3 साल में अहमदाबाद सिविल अस्पताल में ष410ष लोगो ने अंगदान किया
जिसमें
ऐक भी मुस्लिम नहीं है
जबकि 62 ष्मुस्लिमो ने अंगषलिये ।
आखिर ऐसा क्यों है ? ?
मैनें अपने मुस्लिम परिचित से पूछा तो उसका जवाब सुनके आप आश्चर्यचकित रह जाएंगे,
जवाब आया कि
ष्हमारे धर्मष में ष्अल्लाष के बनाये हुए ष्शरीर को वैसाष ही ष्दफनाना होताष है ष्जैसा अल्लाष ने दिया था,
कुछ ष्कमष करके ष्नहींष, इसीलिए ष्मौत के बादष
भी ष्अंगदानष हमारी ष्कौम मेंष ष्हरामष है ।ष
मैनेंष कहा फिर ष्आपष अंग ष्ले कैसेष लेते हैं? तो जवाब आया।
इस बारे में
अल्लाष के रसूल ने कुछ ष्फरमायाष ही नहीं है।
नोटष एवम षशिक्षाष रू–
अपने परिजनो मृत्यु पश्चातष ष्अंगदानष करते समय ष्शर्त रखेंष
कि ये ष्अंगष
किसी षहिन्दूष को ही मिलने चाहिए।'
अच्छे–बुरे दोनों ष्मुसलमानष ष्एकष ही ष्कुरानष पढ़ते हैं,
बुराष मुसलमान आतंकी बनता है
और अच्छा मुसलमान
उसका
मौन समर्थन करता है
ऊपर की
घटना सिद्धष करती है कि ष्कुरानष में षसिर्फ़ लेना लिखाष है ,
ष्देना लिखना ष्भूलष गए
रुकड़वा –सच
दीपक चौरसिया ,ने लिखा है, इसमें सच्चाई है,
भाजपा मोदी से पहले और मोदी के बादरू
जब तक ष्भाजपाष ष्वाजपेयीष जी की षविचारधाराष
पर चलती रही,
वो ष्रामष के
बताये ष्मार्ग परष चलती रही। मर्यादाष
नैतिकताष, और ष्शुचिताष, इनके लिए ष्कड़े मापदंडष
तय किये गये थे। ष्परन्तुष कभी भी ष्पूर्ण बहुमतष ष्हासिल नहीं कर सकी
फिर होता है
नरेन्द्र मोदीष का ष्पदार्पण! .... मर्यादा पुरुषोत्तम ष्राम के चरणष चिन्हों पर ष्चलने वालीष
भाजपाष को
मोदी जीष, कर्मयोगी ष्श्री कृ ष्णष की
राह पर ले आते हैं !
श्री कृष्ण ष्अधर्मीष को ष्मारने मेंष
किसी भी प्रकार की ष्गलती नहींष करते हैं। ....
छल होष तो छल सेष
कपट होष तो ष्कपट सेष
अनीति होष तो ष्अनीति सेष ,
अधर्मीष को
नष्ट करना ही उनका ष्ध्येयष होता है!
इसीलिए वो
अर्जुन को
केवल कर्म
करने की शिक्षा देते हैं !
बिना सत्ताष के
आप ष्कुछ भी नहींष कर सकते हैं ! इसलिए ष्कार्यकर्ताओंष को चाहिए कि ष्कर्णष का ष्अंत करतेष समय कर्ण के षविलापों परष
ध्यान ना दें! ....
केवल ष्ये देखेंष कि ष्अभिमन्युष की
ष्हत्या के समयष उनकी ष्नैतिकताष ष्कहाँष चली गई ष्थीष ?
कर्ण के ष्रथष का ष्पहियाष जब
ष्कीचड़ष में धंस गया, तब
भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहारू पार्थ, देख क्या रहे हो ? ......
इसे समाप्त कर दो!
संकटष में घिरे
कर्ण नेष कहारू
यह तो ष्अधर्म ष्है !
भगवान
श्री कृष्णष ने कहाः ष्अभिमन्युष को घेर कर ष्मारने वालेष, और ष्द्रौपदीष को भरे दरबार में
ष्वेश्याष कहने वाले के ष्मुख सेष आज ष्अधर्म कीष बातें करना ष्शोभाष
नहीं देता है !!
आज
राजनीतिकष गलियारा जिस तरह से ष्संविधानष
की ष्बातष कर रहा है, तो ष्लग रहाष है जैसे हम ष्पुनःष ष्महाभारत युगष
में आ गए हैं !
षविश्वास रखोष, महाभारत का ष्अर्जुन नहीं चूकाष था !
ष्आज का अर्जुनष भी नहीं चूकेगा !
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत!
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् !
चुनावी जंगष में ष्अमित शाहष
जो कुछ भी
जीतष के लिए
पार्टीष
के लिए कर रहे हैं, वह ष्सब उचितष है!
साम, दाम, दण्ड , भेद ,राजा या क्षत्रिय द्वारा अपनाई जाने वाली नीतियाँ हैं, जिन्हें उपाय–चतुष्टय (चार उपाय) कहते हैं !
राजा को राज्य की व्यवस्था सुचारु रूप से चलाने के लिये सात नीतियाँ वर्णित हैं !
राजनीतिक गलियारे में ऐसा षविपक्ष नहींष है, जिसके साथ ष्नैतिक–नैतिकष
खेल ष्खेला जाएष! सीधा
धोबी पछाड़ष ही ष्आवश्यकष है !
एक बात और!
अनजाना इतिहासष
बात ष1955ष की है! ष
सउदीष अरब के बादशाह ष्शाह–सऊदीष प्रधान मंत्री ष्जवाहरलाल नेहरूष के षनिमंत्रण परष ष्भारत आएष थे
वे 4 दिसम्बर 1955 को दिल्ली पहुँचे, ष्शाह–सऊदीष दिल्ली के बाद, ष्वाराणसीष भी गए!
सरकार ने
दिल्ली से ष्वाराणसीष
जाने के लिए, ष्शाह–सऊदीष के लिए एक
विशेष ट्रेन में, षविशेष कोचष की व्यवस्था की! शाह सऊदी
जितने दिनष वाराणसी में रहे ष्उतने दिनोंष तक ष्बनारसष की सभी ष्सरकारी इमारतोंष पर
कलमा तैय्यबा लिखे हुए झंडे लगाए गए थे!
वाराणसी मेंष जिन–जिन रास्तों–सडकों से ष्शाह–सऊदी ष को ष्गुजरनाष था,
उन सभी ष्रास्तों–सड़कोंष में पड़ने वाले मंदिरों और मूर्तियों को पर्दों से ढक दिया गया था!
इस्लाम की तारीफ़ में, और हिन्दुओं का मजाक उड़ाते हुए शायर ष्नज़ीर बनारसीष ने एक शेर कहा थाः –

अदना सा गुलाम उनका,
गुज़रा था बनारस से,
मुँह अपना छुपाते थे,
ये काशी के सनम–खाने!

अब खुद ही सोचिये कि क्या आज मोदी और योगी के राज में, किसी भी बड़े से बड़े तुर्रम खान के लिए, ऐसा किया जा सकता है ? आज ऐसा करना तो दूर, करने के लिए सोच भी नहीं सकता!
हिन्दुओ , उत्तर दो, तुम्हें और कैसे अच्छे दिन देखने की तमन्ना थी ?
आज भी बड़े बड़े ताकतवर देशों के प्रमुख भारत आते हैं, और उनको वाराणसी भी लाया जाता है! लेकिन अब मंदिरों या मूर्तियों को छुपाया नहीं जाता है, बल्कि उन विदेशियों को गंगा जी की आरती दिखाई जाती है, और उनसे पूजा कराई जाती है!
ये था कांग्रेसियों का हिंदुत्व दमन!
कुछ को मैं जगाता हूँ!
कुछ को आप जगाएं!
राष्ट्रधर्म रूसर्वोपरि जय हिंद।
जय श्री कृष्ण जय श्री राम जागो हिन्दू जागो। जाति पाति को त्यागो।
सभी हिन्दू भाई –भाई।
वर्ण व्यवस्था में नहीं बुराई।
आपस में एक–दूसरे का सम्मान करो। राष्ट्र निर्माण में सहयोग करो।
राष्ट्र सुरक्षित, हम सभी सुरक्षित।
जय हिन्द– जय भारत

मुझको तो ज़िंदगी जंची ही नहीं
आप कहते हैं कुछ कमी ही नहीं

किस तरह ग़म की क़ैद से निकलूं
कोई तदबीर सूझती ही नहीं

तेरी तस्वीर बोलती है मगर
तू मेरी जान बोलती ही नहीं

इश्क़ में हर कोई मुलव्विस है
सिर्फ़ हालत ये आपकी ही नहीं

सच है या वहम है खुदा जाने
वो सिवा मेरे सोचती ही नहीं

बोल–बाला है झूठ का इतना
सच को दुनिया ये मानती ही नहीं

जिसको जो जी में आए बकता है
क्यों कि सरकार टोकती ही नहीं

बांग्लादेश स्थिति....

बांग्लादेश में हिंदुओं सरेआम काटने की धमकी दे साजिश रचने वाले वाले इस्लामी

कट्टरपंथी, ाजनीतिक दलों वं लगातार स्कॉन और हो रहे ंदिरों पर भारत रकार की क्या ीति (Govt-Policy) है?... रकार को इस र स्पष्टीकरण ेना चाहिए?... त्ता पक्ष एवं ल्पसंख्यकों के ाम पर चिल्लाने ाले विपक्षी दोनों क्षों के भारतीय ताओं का ष्चुप्पीष रहना खतरनाक... विपक्ष एवं भारत सरकार एवं विदेश व गृह मंत्रालय की भी जिम्मेदारी...

–संजय वर्मा, स्वतंत्र पत्रकार –सामाजिक विज्ञान, विज्ञान एवं खेलकूद (गोरखपुर)

पिनाका मिसाइल सिस्टम का सफल परीक्षण...भारत के लिए एक बड़ी उपलब्धि. ..

44 सेकेंड में 12 रॉकेट, भारत ने तैयार किया मौत बनकर बरसने वाला खतरनाक हथियार पिनाका मिसाइल सिस्टम, को भारत सेना में साल 1999 में कारगिल युद्ध के दौरान शामिल किया गया था. युद्ध में पिनाका ने पाकिस्तान की स्थिति को नष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी. 44 सेकेंड में 12 रॉकेट, भारत ने तैयार किया मौत बनकर बरसने वाला खतरनाक हथियार रू पिनाका मिसाइल सिस्टम का सफल परीक्षण (कुछ और खतरनाक अपग्रेडेशन के साथ) फिर किया गया . भारत लगातार सैन्य क्षमता बढ़ाने के लिए नए–नए सैन्य हथियारों का विकास और उनका परीक्षण कर रहा है. भारत ने अपने एडवांस्ड गाइडेड वेपेन सिस्टक पिनाका का सफल परीक्षण सफल रहा. पिनाका मिसाइल सिस्टम दुश्मन को पलभर में नेस्तनाबूद करने की क्षमता रखता है. डीआरडीओ (DRDO) को बधाई...

–संजय वर्मा, स्वतंत्र पत्रकार –विज्ञान एवं खेलकूद एवं –सचिव इंडियन साइंस राइटर एसोसिएशन (ISWA) (उप्र चौप्टर) (गोरखपुर)

इस गंभीर बीमारी से हर साल लाखों लोगों की हो जाती है मौत, आपमें भी तो नहीं हैं ऐसे लक्षण?

श्वसन समस्याएं वैश्विक स्तर पर गंभीर चिंता का कारण हैं, इसके कारण हर साल स्वास्थ्य क्षेत्र पर अतिरिक्त दबाव भी बढ़ता जा रहा है। क्रोनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी) ऐसी ही एक बीमारी है जो फेफड़ों और वायुमार्ग को प्रभावित करती है। इस बीमारी के कारण आपका वायुमार्ग अवरुद्ध हो जाता है जिससे सांस लेना मुश्किल हो सकता है। इसमें वायुमार्ग के अंदर सूजन और जलन की दिक्कत भी बढ़ जाती है। वैश्विक आंकड़ों पर नजर डालें तो पता चलता है कि फेफड़ों की इस बीमारी के कारण हर साल लाखों लोगों की मौत हो जाती है। साल 2021 में सीओपीडी के कारण 3.5 मिलियन (35 लाख) लोगों की मौत हुई, जो दुनिया भर में होने वाली सभी मौतों का लगभग 5: था। ये आंकड़ें सीओपीडी को वैश्विक स्तर पर मौत का चौथा प्रमुख कारण बनाते हैं। फेफड़ों की इस बीमारी के बारे में लोगों को जागरूक करने और इससे बचाव के उपायों को लेकर शिक्षित करने के उद्देश्य से हर साल नवंबर महीने के तीसरे बुधवार (इस बार 20 नवंबर) को विश्व सीओपीडी दिवस मनाया जाता है। इस साल विश्व सीओपीडी दिवस के लिए का थीम है अपने फेफड़ों के कार्य को जानें। आइए इस बीमारी के बारे में विस्तार से जानते हैं और समझते हैं कि इससे बचाव कैसे किया जा सकता है?

हर साल लाखों लोगों की हो जाती है मौत

सीओपीडी की समस्या हमारे फेफड़ों को क्षति पहुंचाती है। अगर समय रहते इसका निदान न हो पाए या इलाज न हो तो इसके कारण जान जाने का भी खतरा रहता है। आमतौर पर इसे उम्र बढ़ने के साथ होने वाली बीमारी माना जाता रहा है हालांकि आंकड़ों से पता चलता है कि 40 से कम आयु वालों में भी इसका तेजी से निदान बढ़ गया है। साल 2020 के आंकड़ों के मुताबिक दुनियाभर में सीओपीडी के अनुमानित 480 मिलियन (48 करोड़) मामले थे, जो वैश्विक आबादी का लगभग 10.6: है। इसके अलावा ये बीमारी हर साल लाखों लोगों की मौत का कारण बनती है। साल 2019 में 3.23 मिलियन (32.3 लाख) लोगों की इससे मौत भी हो गई।

समय रहते लक्षणों की करें पहचान

डॉक्टर कहते हैं, सीओपीडी के लक्षणों की समय रहते पहचान जरूरी है ताकि इसका उचित इलाज किया जा सके। वैसे तो सीओपीडी के लक्षण आमतौर पर तब तक प्रकट नहीं होते जब तक कि फेफड़ों को बहुत ज्यादा नुकसान न हो जाए। हालांकि कुछ संकेत हैं जिन्हें बिल्कुल अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए। गंध, ठंडी हवा, वायु प्रदूषण, सर्दी या संक्रमण के कारण इस तरह के लक्षण ट्रिगर हो सकते हैं।

सांस लेने में परेशानी, खासकर शारीरिक गतिविधियों के दौरान।

सांस लेते समय घरघराहट या सीटी जैसी आवाज आना।

लगातार बहुत अधिक बलगम वाली खांसी आना। बलगम साफ, पीला या हरा हो सकता है।

सीने में जकड़न या भारीपन महसूस होते रहना।

बहुत ज्यादा थकान महसूस होना।

बार–बार फेफड़ों में संक्रमण होना।

टखनों, पैरों या टांगों में सूजन।

किन लोगों में इसका खतरा अधिक होता है?

स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं वैसे तो ये बीमारी किसी को भी हो सकती है हालांकि कुछ स्थितियों में इसका जोखिम काफी बढ़ जाता है। धूम्रपान सीओपीडी के लिए सबसे बड़ा जोखिम कारक है, लेकिन धूम्रपान करने वाले हर व्यक्ति को यह हो ये जरूरी नहीं है। आप 65 वर्ष से ज़्यादा उम्र के हों या फिर वायु प्रदूषण, रासायनिक पदार्थों, धूल या धुएं के संपर्क में रहे हों तो आपमें इसका खतरा हो सकता है।

बचाव के लिए छोड़ दें धूम्रपान

अधिकांश मामलों में सीओपीडी सीधे सिगरेट पीने से जुड़ी समस्या होती है, सीओपीडी को रोकने का सबसे अच्छा तरीका है कि धूम्रपान न करें। रसायनों–प्रदूषण से बचाव और दिनचर्या को ठीक रखकर भी सीओपीडी से बचा जा सकता है। कुछ प्रकार की दवाओं, थेरेपी आदि के माध्यम से लक्षणों को बिगड़ने से रोका जा सकता है। समय पर इसकी पहचान हो जाने से सीओपीडी के कारण होने वाली जटिलताओं को कम करने में मदद मिल सकती है।

बीके राजयोगी रामस्वरूप भाई का संक्षिप्त जीवन परिचय

आपका लौकिक जन्म 10 सितंबर 1950 को हुआ था। इसे संयोग ही कहेंगे कि आपकी अलौकिक ज्ञान में आने की जन्मतिथि भी 10 सितंबर 1974 ही है। आपको कोलकाता में राजयोगिनी दादी निर्मलशांता जी के परमात्मा का परिचय मिला। पहले ही दिन से बाबा का ज्ञान मिलने के बाद आज तक पूर्ण निश्चय, समर्पण भाव के साथ तन-मन-धन से इस रुद्र गीताज्ञान यज्ञ में बाबा की भुजा बनकर चल रहे हैं।

1990 में माउंट आबू में आ गए-

ज्ञान में आने से पहले आपने बहुत भक्ति की। इस कारण अमृतवेला 3 बजे उठ जाते थे। साथ ही कोलकाता के प्रसिद्ध ईडन गार्डन और विक्टोरिया मेमोरियल में मॉर्निंग वॉक, जॉगिंग, हॉर्स राइडिंग, योग और जूडो की क्लास करने के लिए सुबह 3 निकल जाते थे। आपकी लौकिक-अलौकिक पढ़ाई कोलकाता में ही हुई। यहां से बीकॉम ऑनर्स और एलएलबी (वकालत) करने के बाद लाइट, बिजली के लैंप बनाने का बिजनेस शुरू किया। धीरे-धीरे बाबा की श्रीमत प्रमाण और बड़ों की राय से सेवा करते हुए सन् 1980 से 1990 तक परदादी के पास ही एलगिन रोड सेंटर पर रहकर कारोबार संभालते रहे। इसके बाद वर्ष 1989 में नया भवन, बांगुर एवेन्यू, कोलकाता में बनाया और वर्ष 1990 में दादी संत्री के शरीर छोड़ने के बाद आपको संपूर्ण वैराग्य आ गया। इसके बाद बाबा के प्रति प्यार, लगन के चलते आपने व्यापार को समेट कर परमात्म अवतरण भूमि माउंट आबू आ गए।

मीडिया प्रभाग में दे रहे हैं सेवाएं-

वर्तमान में आप मधुबन में मीडिया प्रभाग और ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग क्षेत्र में सेवा कर रहे हैं। देश-विदेश की सूचनाओं को सबको भेजने की सेवा में सेवारत हैं। बाबा की प्रेरणा से आपने दादी निर्मलशांता जिन्हें सभी प्यार से परदादी भी कहते हैं, उनकी जीवन कहानी पर लिखी पुस्तक 'थ्री इन वन' को सात भाषाओं में अनुवाद कराकर यज्ञ सेवा की। इस पुस्तक में परदादी के साथ सुनहरी यादों को संजोया गया है। इन पुस्तकों को साहित्य विभाग से प्राप्त किया जा सकता है।

दादी प्रकाशमणिजी के निर्देशन में 60 देशों में की सेवाएं-

ज्ञान में आने के बाद बड़ी दादी आदरणीय राजयोगिनी प्रकाशमणि दादीजी, भ्राता निर्वैर भाईजी और डॉक्टर निर्मला दीदीजी के आदेशानुसार विदेश सेवा के लिए भी जाना हुआ। इस दौरान आपने करीब 60 देशों में रहकर सेवाएं की और कई जगह बाबा के सेवाकेंद्र भी खोले गए। अभी वर्तमान समय भारत के विभिन्न राज्यों में समय प्रति समय, सेवा का निमंत्रण मिलने पर जाना होता रहता है।

मनसा सेवा और योग के प्रयोग पर फोकस-

विश्वभर की आत्माओं को मनसा सेवा से सकाश देने की सेव में आपकी विशेष रुचि है। आप ज्ञान में पिछले 50 साल से चल रहे हैं और वर्तमान में आपके शरीर की उम्र 72 वर्ष है।

अच्छा

इन्हीं शुभकामना के साथ...

आपका दैवी भाई
बीके रामस्वरूप
मधुबन मीडिया, ब्रह्माकुमारीज, माउंट आबू
मो. 9414004 983, 8005834279
Email_ bk.ramswarup@gmail.com

मन और मौन को समझना हर किसी के बस की बात नहीं होती। दुख जहां बांधने का काम करता है वहीं सुख एक दूसरे को बांट देता है। सुख और दु:ख में कोई ज्यादा भेद नहीं, जिसे मन स्वीकारे वह सुख, और जिसे अस्वीकारे वह दु:ख, सारा खेल हमारी स्वीकृति व अस्वीकृति का ही तो है। बाकी अपने अंदर की प्रतिभा प्रभाव से नही स्वभाव से, व्यवहार से करनी है।

दुनियां से दो कदम भले ही पीछे चलना!
पर चलना सिर्फ अपने दम पर!!
जीवन में ऐसे कई लोग होते हैं, जिन्हें आप
समय के साथ भूल जाते हैं.'लेकिन
ऐसे कुछ ही लोग होते हैं....,
जिनके साथ आप
समय भूल जाते हैं!
उन्हें कभी न भूलें।

राष्ट्रीय प्रेस दिवस पर शुभकामनाएं ....

राष्ट्रीय प्रेस दिवस हर साल 16 नवंबर को मनाया जाता है। दरअसल प्रेस की आजादी की रक्षा के लिए प्रेस परिषद को 4 जुलाई 1966 को बनाया गया, लेकिन प्रेस परिषद ने 16 नंवबर 1966 को काम शुरू किया। इस वजह से हर साल 16 नंवबर को राष्ट्रीय प्रेस दिवस मनाया जाता है। विश्व में आज करीब 55 देशों में प्रेस परिषद है। कुछ देशों में प्रेस परिषद को मीडिया परिषद भी कहा जाता है। परिषद का मकसद था– देश में प्रेस की आजादी को बचाए–बनाए रखने और पत्रकारिता के उच्च मापदंडों की रक्षा में मदद करना। राष्ट्रीय प्रेस दिवस पर शुभकामनाएं....

–संजय वर्मा, स्वतंत्र पत्रकार –सामाजिक विज्ञान, विज्ञान एवं खेलकूद (गोरखपुर)

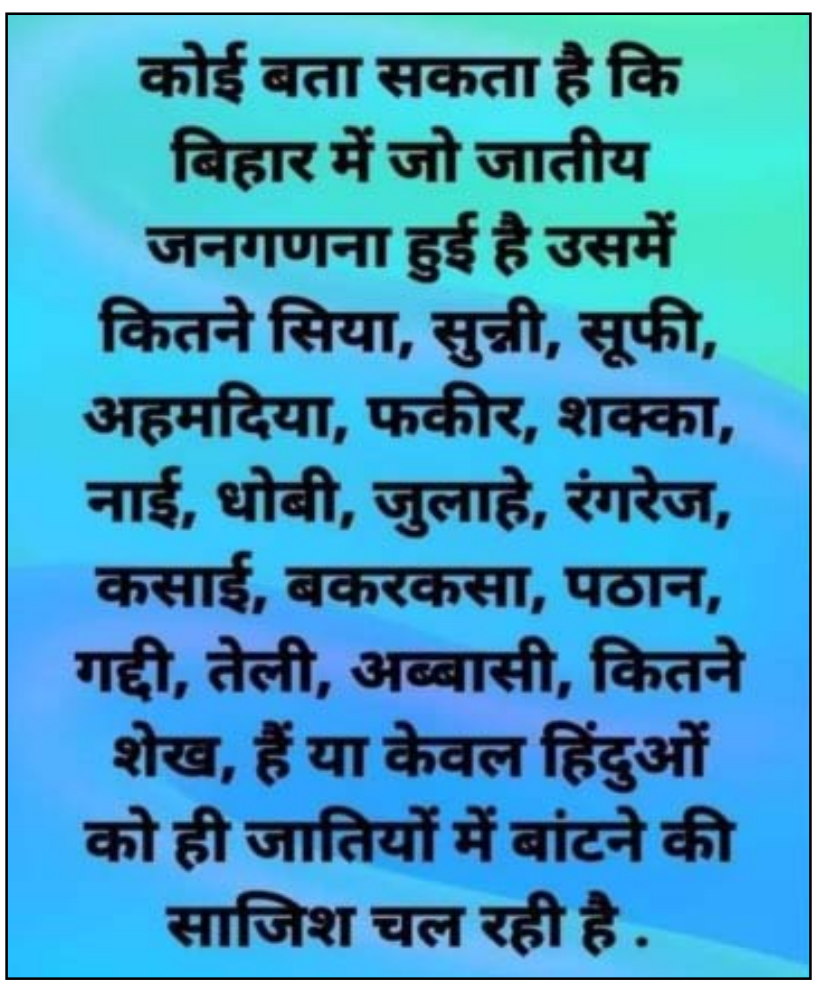

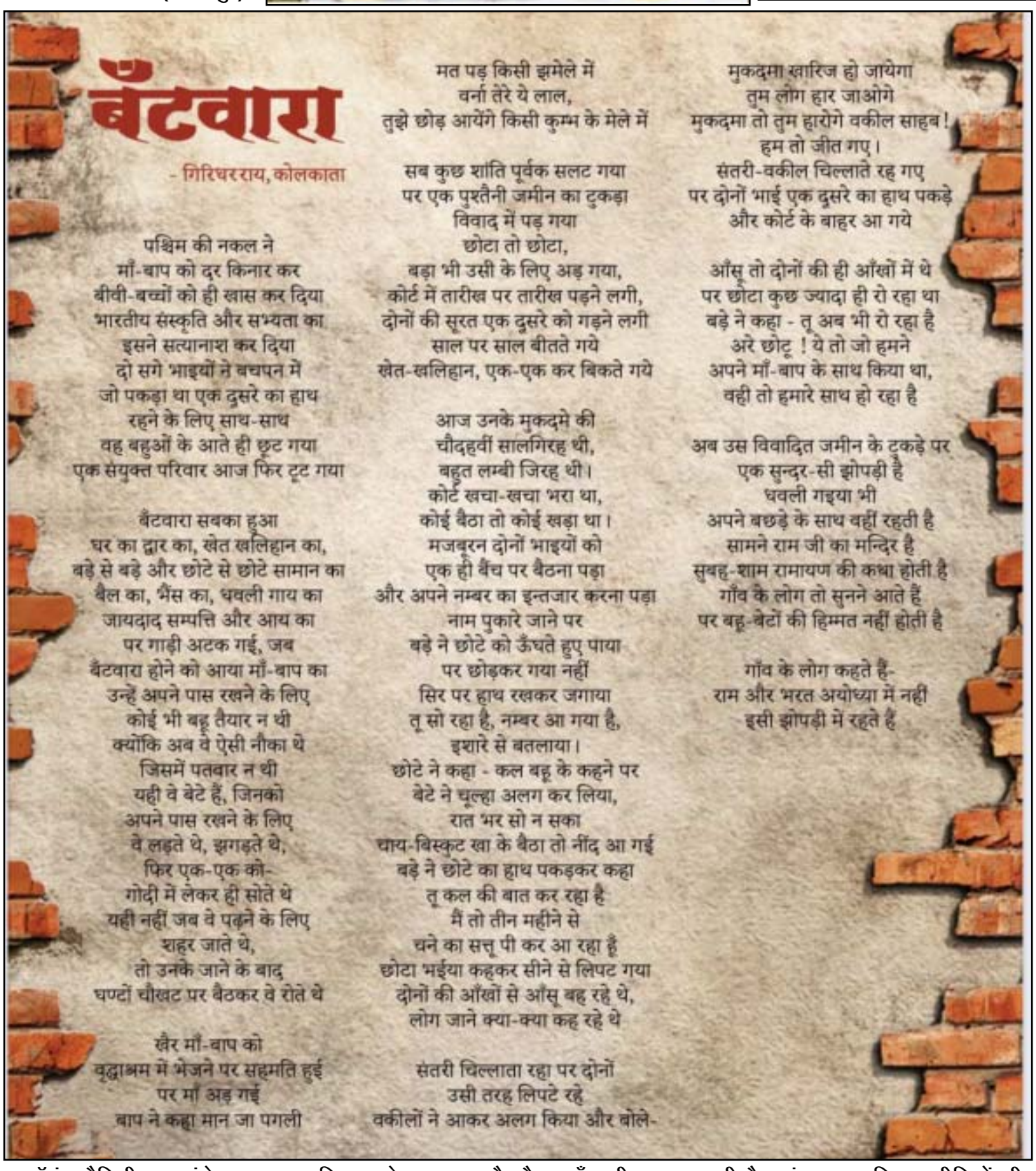

अन्नपूर्णा गुप्ता 'सरगम'
19/11/2023

मैं सम्मान करती हूं ऐसे पुरुषों का
जो सिद्ध करतें हैं अपना पुरूषत्व
स्वत:, अधिकारों के साथ
स्त्रियों को सुरक्षा और आदर दे कर।

जो भांप लेते हैं
उनकी असहजता को
और प्रयास करते है
सहजता लाने का।

जो भीड़ में भटके हाथों को झटकर
बना देते हैं एक सुरक्षित घेरा

जो घूरती आंखों को घूर कर
बदल देते हैं उनकी दिशा।

जो अवसाद में सहला कर माथा
दूर फेंकते हैं परेशानी को।

जो लेकर चलतें हैं
हृदय में कोमलता
आंखों में नमी।।

जो उदासी के घेरे को
मिटा जाते हैं
निश्चिंता की मुसकान से
'मैं हूं ना' के अहसास से।।

#internationalmen'sday

जॉइंट फैमिली का कांसेप्ट अब प्रायः विलुप्त होता जा रहा है और जहाँ अभी बचा हुआ भी है वहां पर सामाजिक कुरीतियों की नजर लगती जा रही है। दरअसल पाश्चात्य सभ्यता की नक़ल में हम अपनी संस्कृति को पीछे छोड़ते जा रहे हैं। उन्हीं विभाजनकारी कुरीतियों में एक है ष्बंटवाराष् जो श्री गिरिधर राय, कोलकाता के विख्यात व्यंग साहित्यकार की कविता का शीर्षक भी है। कविता के माध्यम से कवि ने बंटवारे के मर्म को दर्शाया है जो पाठकों के हृदय को अंदर तक झकझोड़ का रख देगी।

मुलुंड में मतदान प्रतिशत में गिरावट

(संवाददाता)

मुलुंड। मुलुंड विधानसभा क्षेत्र में एक तस्वीर सामने आई है कि आज सुबह से नागरिकों को अपेक्षित प्रतिक्रिया नहीं मिली है। दिलचस्प बात यह है कि मतदान सुबह 7 बजे शुरू हुआ और शाम 6 बजे तक कुल60. 45: मतदान होने की जानकारी वरिष्ठ चुनाव अधिकारियों ने दी। सुबह सात बजे से शाम छह बजे तक मतदान की अनुमति है. मुलुंड में विभिन्न संगठनों, आवास परिसरों और सामाजिक संगठनों ने नागरिकों से बाहर जाकर मतदान करने की अपील की है। हालांकि तस्वीर यह उभर कर सामने आई है कि मतदाताओं में उतना उत्साह नहीं है. मुलुंड में चुनाव कार्यालय के तहसीलदार और सहायक चुनाव रिटर्निंग अधिकारी दीपाली गवली के मार्गदर्शन में, लगभग 498 नागरिक के घर चूनाव कार्यालय के अधिकारी पहुंचे और उन्हें घर पर वोट देने के अपने अधिकार का प्रयोग करने की अनुमति दी। इनमें 85 वर्ष से अधिक उम्र के वरिष्ठ नागरिक और दिव्यांग शामिल थे। इस वर्ष के निवेश में चुनाव कार्यालय ने वरिष्ठ नागरिकों के लिए व्हीलचेयर और नागरिकों के लिए बैठने और पीने के पानी की उचित व्यवस्था की थी। मुलुंड में चुनाव शांतिपूर्वक संपन्न हुए।

कोट

इस साल मुलुंड में 310 मतदान केंद्र हैं। पुलिस ने किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए कड़े इंतजाम किए हैं और एहतियात के तौर पर समुदाय के सदस्यों को हिरासत में लिया है। मतदाताओं को विभिन्न सुविधाएं मुहैया करायी गयी हैं. इससे नागरिकों की परेशानी कम हो गयी और मतदान शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हो गया. इसके अलावा उचित योजना के कारण मतदान केंद्रों के बाहर कतारें और भीड़ कम हो गई।

योगेश भीमराव खरमाटे

चुनाव रिटर्निंग अधिकारी

मुलुंड विधानसभा क्षेत्र

मतदान केंद्र दूर रखने पर गोकुलेश

सोसाइटी के निवासियों में रोष

मुलुंड। मुलुंड पश्चिम के गौशाला रोड़ एवं म मो मालवीय रोड़ के बीच स्थित गोकुलेश एवं अन्य सोसाइटी के मतदाताओं द्वारा चुनाव में मतदान हेतु मनपा शाला, सेवाराम लालवानी रोड़ पर केंद्र बनाये जाने पर गहरा रोष व्यक्त किया है। समाजसेवी पत्रकार पी पी पाण्डेय ने मुलुंड के चुनाव अधिकारी को लिखें पत्र में मांग किया है कि हमारी सोसाइटी के सामने ही गौशाला रोड़ मनपा शाला है और हमेशा वहीं मतदान केंद्र बनाया जाता रहा है। इस बार मतदान केंद्र दूर ले जाने पर लोगों को, विशेष रुप से वरिष्ठ नागरिकों को समस्याओ का सामना करना पड़ा। अतः आगामी चुनाव में यह समस्या दूर कर गौशाला रोड़ पर ही मतदान केंद्र बनाया जाये।

अयोध्या महोत्सव में इस बार दो विश्व रिकॉर्ड बनाने की तैयारी

–दुरदुरिया पूजन में सात हजार मातृशक्ति व कन्यापूजन में सात हजार कन्यायें करेंगी प्रतिभाग

–26–27 दिसंबर को होगा ऐतिहासिक आयोजन

अयोध्या। अयोध्या महोत्सव न्यास, उत्तर देश पर्यटन विभाग और जिला प्रशासन अयोध्या के संयोजन में आयोजित होने वाले अयोध्या महोत्सव में इस वर्ष दो विश्व रिकॉर्ड बनाने की तैयारी है। दुरदुरिया पूजन और कन्या पूजन का कार्यक्रम बृहद स्तर पर आयोजित किया जाएगा, जिसमें सात हजार मातृशक्तिया व सात हजार कन्याये भाग लेंगी। न्यास अध्यक्ष हरीश कुमार श्रीवास्तव ने मंगलवार को शहर के एक होटल में पत्रकारों से वार्ता करते हुए कहा कि आज जब अयोध्या में भव्य दीपोत्सव का आयोजन किया जा रहा है और इसके प्रतिवर्ष नए विश्व रिकॉर्ड बन रहे हैं तो अपनी लोक आस्था के प्रति समर्पित लोगों के मन के कार्यक्रम दुरदुरिया पूजन को विश्व पटल तक लाने के उद्देश्य इस बार वृहद स्तर पर किया जा रहा है। विभिन्न लोक परंपराओं को विश्व पटल पर लाने के लिए विश्व रिकॉर्ड की टीम को आमंत्रित किया गया है, जिसकी संस्तुति प्राप्त हो गई है।

अयोध्या की लोक आस्था के प्रतीक अवसान माता की पूजा का कार्यक्रम दुरदुरिया पूजन 26 दिसंबर को सामूहिक रूप में अयोध्या महोत्सव न्यास के संगठन महासचिव अरुण द्विवेदी के संयोजन में आयोजित किया जाएगा जिसके प्रभारी न्यास के प्रबंधक आकाश अग्रवाल व नारी शक्ति के प्रतीक कन्या पूजन अयोध्या महोत्सव न्यास की महासचिव ऋचा उपाध्याय के संयोजन में 27 दिसंबर को जिसकी प्रभारी न्यास की प्रबंध निदेशक नाहिद कैफ होंगी। इसके साथ ही दुरदुरिया पूजन में न्यास के वरिष्ठ उपाध्यक्ष विजय यादव, उपाध्यक्ष रवि चौधरी, गृजेश त्रिपाठी, संयुक्त सचिव बृजेश ओझा, कार्यक्रम सचिव उज्ज्वल चौहान, कार्यालय सचिव निकिता चौहान, कार्यक्रम प्रभारी सदक हुसैन, स्वाती सिंह, शशांक उपाध्याय, अनुराग सिंह, शिप्रा श्रीवास्तव, नेहा हाशमी, ममता, नीलम, रचना सिंह, कंचन, सुशीला, रामावती, शिवदेवी आदि दुरदुरिया कार्यक्रम में सहयोग प्रदान करेंगी जबकि कन्या पूजन में उपाध्यक्ष मोहित मिश्रा, भूपेंद्र प्रताप सिंह, कोषाध्यक्ष रेगन सिंह चौहान, संगठन सचिव जनार्दन पाण्डेय, प्रचार सचिव गौतम सिंह, मीडिया प्रभारी श्रीप्रकाश पाठक, कार्यक्रम प्रभारी सूर्याश चोपड़ा, पूजा अरोडा, जे पी पाण्डेय, राजेश गौड़, अंकित श्रीवास्तव, अवनीश सिंह, सुरेश मिश्रा, मरियम फातिमा व्यवस्था संचालन में सहयोग प्रदान करेंगी।

न्यास के अध्यक्ष ने बताया कि दुरदुरिया पूजन और कन्या पूजन कार्यक्रम में 7–7 हजार मातृशक्तियां व कन्याये भाग लेंगी, जिसकी समस्त तैयारियां पूर्ण कर ली गई हैं। इस ऐतिहासिक आयोजन में नारी सशक्तीकरण और नारी शक्ति की उपासना के प्रतीक कन्या पूजन को विश्व में ख्याति प्राप्त होगी। यह आयोजन अयोध्या की सांस्कृतिक धरोहर को विश्व पटल पर लाने में महत्वपूर्ण भूमिका विभाएगा। अयोध्या महोत्सव न्यास में संरक्षक मण्डल में मणिराम दास छावनी के मंहत कमलनयन दास, असर्फी भवन के महंत धराचार्य, बावन मन्दिर महंत वैदेही बल्लभ शरण, उदासीन आश्रम महंत भरतदास, दिगम्बर अखाड़ा महंत सुरेशदास, श्री राम लभाकुंज महंत राम कुमार दास, हनुमान गढ़ी महंत रामदास, श्री रामजन्म भूमि न्यास सदस्य डॉ अनिल मिश्रा है। जबकि संयोजक मंडल में विधायक अयोध्या वेद प्रकाश गुप्ता, महापौर अयोध्या गिरीशपति त्रिपाठी, विधायक रूदौली रामचंद्र यादव, विधायक कापुर अमित सिंह चौहान, अध्यक्ष जिला पंचायत रोली सिंह, जिलाध्यक्ष भाजपा संजीव सिंह, विधान परिषद सदस्य अंगद सिंह, पूर्व विधायक इंद्र प्रताप तिवारी, बाबा गोरखनाथ, महानगर संघ चालक डॉ विक्रमा प्रसाद हैं।

ये कैसी लाचारी है-हास्य व्यंग

ये कैसी लाचारी है, नर पे नारी भारी है,घ्घर बाहर में मर्दों की ,हालत बड़ी बेचारी है। बाई ने छुट्टी कर ली ,सिर पर बर्तन भारी है, झाड़ू, पोछा, खाना भी, कितनी ज़िम्मेदारी है।घ्काम सभी करने पर भी, निकली गलती सारी है ये कैसी लाचारी है, नर पे नारी भारी है।

शॉपिंग होती है उनकी, मर्दों का क्या काम यहाँ, कपड़े मेकअप सब उनके, पति है क्रेडिट कार्ड वहाँ। कपड़े फटे पुराने अब, अल्मारी भी ख़ाली है, ये कैसी लाचारी है, नर पे नारी भारी है। किटी पार्टी की चर्चा में,पति बने बेचारा है, अपना लगे निकम्मा जी, दूसरे का बड़ा न्यारा है।घ्हँसते गाते पति की पोल ,सबने खूब उधारी है, ये कैसी लाचारी है, नर पे नारी भारी है। वित्त मंत्री भी नारी अब, बजट उसे बनाना है गहने पर तो छुट दिया,मदिरा से कर पाना है, मर्दों पर तो पूरा कर,छूट के लिए भी नारी है, ये कैसी लाचारी है, नर पे नारी भारी है। दफ़्तर में भी रहम कहाँ, नारी धाक जमाती है, आरक्षण के नाम तले, नौकरी पहले पाती है।घ्करते उसके काम सभी, मुस्कान जो प्यारी है ये कैसी लाचारी है, नर पे नारी भारी है।

स्वरचित

सीमा त्रिवेदी

नवी मुंबई

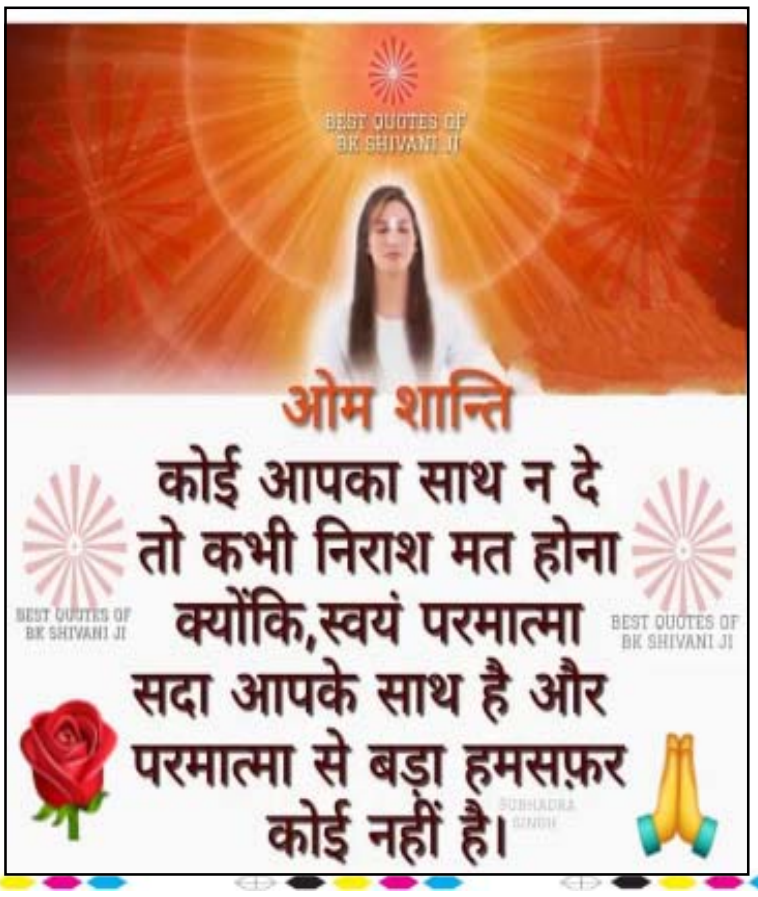

ज्ञान सरोवर
(हिन्दी साप्ताहिक)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक पूजा प्रसाद पाण्डेय द्वारा नवभारत प्रेस लि. नवभारत भवन, प्लाट नं.13, सेक्टर–8, सानपाड़ा (पूर्व) नवी मुम्बई 400706 (एम.एस.) से मुद्रित तथा 11 गोकुलेश सोसायटी, पंडित मदन मोहन मालवीय रोड, मुलुण्ड (प.) मुम्बई 400080 (एम.एस.) से प्रकाशित।

सम्पादक

पूजा प्रसाद पाण्डेय

मो0– 9833567799

R.N.I.No.MAHHIN/2009/27377

Email: editor@gyansarovar.org
www.gyansarovar.org

समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारों/लेखों में लेखकों तथा संवाददाताओं के अपने विचार हैं। किसी भी लेख/समाचार की जिम्मेदारी प्रकाशक/सम्पादक की नहीं होगी। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुम्बई न्यायालय होगा।